Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II (कला वर्ग)

भाग – 3 (ब)

संस्कृत

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. वर्ण विचार	1
2. संधि	11
3. शब्द	30
4. धातु रूप व लकार	37
5. उपसर्ग	41
6. अव्यय	45
7. प्रत्यय	51
8. समास	78
9. कारक व विभक्ति	93
10. वाच्य	99
11. वचन	105
12. विलोम शब्द	116
13. वाक्य निर्माण	123
14. वाक्य परिवर्तन	127
15. पर्यायवाची शब्द	129
16. क्रिया	133
17. संस्कृत भाषा में प्रश्न निर्माण	136
18. छंद	139
19. अपठित पद्यांश	150
20. अपठित गद्यांश	153
21. संस्कृत शिक्षण विधियाँ	156
22. संस्कृत भाषा कौशल विकास	196
23. मूल्यांकन	206

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वर्ण विचार

भाषा की सबसे छोटी इकाई को वर्ण कहते हैं। पाणिनिने वर्णमाला को 14 सूत्र मे प्रस्तुत किया हैं। परंपरा के अनुसार महेश्वर ने अपने नृत्य की समाति पर जो 14 बार डमरू बजाया, उससे ये 14 (ध्वनियाँ) सूत्र पाणिनि को प्राप्त हुए–

'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम् ।

उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम् ॥

ये सूत्र इस प्रकार हैं –

1. अइउण्(अ, इ, उ)
2. ऋलृक (ऋ, ऌ)
3. एओङ्(ए, ओ)
4. ऐऔच् (ऐ, औ)
5. हयवरट् (ह, य, व, र,)
6. लण् (ल्)
7. ञमङणनम् (ञ, म, ङ, ण, न)
8. झभञ् (झ, भ्)
9. घढधष् (घ, ढ, ध)
10. जबगडदश् (ज, ब, ग, ड, द)
11. खफछठथचटतव् (ख, फ, छ, ठ. थ, च, ट त)

दशरूपक के अनुसार–नृत्त और नृत्य मे भेद होता है। नृत्त भाव पर आश्रित होता हैं, जबकि नृत्य ताल एवं लय पर आश्रित होता है।

12. कपय् (क, प,)

13. शषसर् (श, ष, स)

14. हल् (ह)

प्रत्येक सूत्र के अन्त मे हल् वर्ण का प्रयोग प्रत्याहार बनाने के उद्देश्य से किया गया हैं (जैसे– अइउण् मे ण, हल् वर्ण हैं) इन्हे प्रत्याहारो के अन्तर्गत आने वाले वर्णो के साथ सम्मिलित नहीं किया जाता।

प्रत्याहार

माहेश्वर सूत्रो के आधार पर विभिन प्रत्याहारो का निर्माण किया जा सकता हैं। प्रत्याहार दो वर्णो से बनता हैं, जैसे–– अच्, इक्, यण्, अल्, हल् इत्यादि। इन प्रत्याहारो मे आदि वर्ण से लेकर अन्तिम वर्ण के मध्य आने वाले सभी वर्णो की गणना की जाती हैं। प्रत्याहार के अन्तर्गत आदि वर्ण तो परिगणित होता हैं. किन्तु अन्तिम वर्ण को छोड दिया जाता हैं। समझने के लिए कुछ प्रत्याहार आगे दिए जा रहे हैं

यथा– अच् = अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ–यहाँ प्रत्याहार के आदि वर्ण 'अ' का परिगणन किया गया हैं तथा अन्तिम वर्ण 'च्' को छोड दिया गया हैं

(क) हल् (पांच सूत्र के प्रथम वर्ण 'ह्' से लेकर चौदहवे सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष् तथा स।

(ख) इक् (प्रथम सूत्र क द्वितीय वर्ण 'इ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण क् के मध्य आने वाले सभी वर्ण) इ, उ, ऋ तथा ऌ।

(ग) अक् (प्रथम सूत्र क प्रथम वर्ण 'अ' से लेकर द्वितीय सूत्र के अन्तिम वर्ण क् के मध्य आने वाले सभी वर्ण) अ, इ, उ, ऋ तथा ऌ।

(घ) झल् (अष्टम सूत्र के प्रथम वर्ण 'झ' से लेकर चौदहवे सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ल्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण)

झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द, ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स, तथा ह।

(ङ) यण् (पञ्चम सूत्र क द्वितीय वर्ण 'य' से लेकर षष्ठ सूत्र के अन्तिम वर्ण 'ण्' के मध्य आने वाले सभी वर्ण) य, व, र तथा ल।

सन्धि आदि के नियमं को समझने के लिए प्रत्याहार ज्ञान अत्यन्त आवश्यक हैं।

वर्ण दो प्रकार के होते हैं स्वर तथा व्यञ्जन।

स्वर (अच्)– जो (वर्ण) किसी अन्य (वर्ण) की सहायता के बिना ही बोले जाते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के तीन भेद होते हैं – ह्रस्व, दीर्घ तथा प्लुत

ह्रस्व स्वर- जिस स्वर के उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगे, उसको ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या मे पाँच हैं -- अ,इ,उ,ऋ तथा ऌ। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।

दीर्घ स्वर- जिस स्वर के उच्चारण मं दो मात्राओं का समय लगे उसे दीर्घ स्वर कहते हैं । इनकी संख्या आठ है आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ तथा औ। इनमें से 'ऌ' ध्वनि का दीर्घ रूप ऌ केवल वेदा में प्राप्त होता हैं। अन्तिम चार वर्णो को संयुक्त वर्ण (स्वर) भी कहते हैं. क्योकि ए, ऐ, ओ तथा औ दो स्वरो के मेल से बने हैं।

उदाहरण -

अ+इ=ए अ+ए=ऐ

अ+उ=ओ अ+ओ=औ

प्लुत स्वर-- जिस स्वर के उच्चारण मे तीन या उससे अधिक मात्राओं का समय लगे उसे प्लुत कहते हैं। जब किसी व्यक्ति को दूर से पुकारते हँ तब सम्बोधन पद के अन्तिम वर्ण को तीन मात्रा का समय लगाकर बोलते हैं, उसे ही प्लुत स्वर कहते हैं। लिपि मे प्लुत स्वर को '३' की संख्या से दिखाया जाता है, उदाहरण के लिए एहि कृष्णेउ अत्र गौश्चरति। 'ओ३म्' के ओकार का उच्चारण सर्वत्र प्लुत ही होता है।

सभी ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत स्वर वर्ण अनुनासिक एवं निरनुनासिक भेद से द्विविध हैं।

अनुनासिक-- जिस स्वर के उच्चारण मे मुख के साथ नासिका की भी सहायता ली जाती हैं, उसे अनुनासिक स्वर कहते हैं।

यथा- अँ, एँ इत्यादि समस्त स्वर वर्ण।

निरनुनासिक-- जो स्वर केवल मुख से उच्चारित होता है. वह निरनुनासिक है।

व्यञ्जन (हल्)

जिन वर्णो का उच्चारण स्वर वर्णा की सहायता के बिना नहीं किया जा सकता, उन्हं व्यञ्जन या हल् कहते हैं। स्वर रहित व्यञ्जन को लिखने के लिए वर्ण के नीचे हल् चिह (्) लगाते हैं। सम्पूर्ण व्यञ्जन निम्न तालिकामें दर्शाए गए हैं-

उदाहरण-

कु = क्, ख्, ग्, घ्, ङ् क वर्ग

चु = च्, छ्, ज्, झ्, ञ् च वर्ग

टु = ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् ट वर्ग

तु = त्, थ्, द्, ध्, न् त वर्ग

पु = प्, फ्, ब्, भ् म् प वर्ग

व्याकरण सम्प्रदाय मे इन पांच वर्गो को कु, चु, टु, तु, पु नाम से जाना जाता हैं।

य् र्, ल् व् (अन्तःस्थ)

श् ष् स्, ह् (ऊष्म)

1. स्पर्श-- उपर्युक्त ''क्'' से 'म्' तक के 25 वर्णो को स्पर्श कहते हैं। इनके उच्चारण के समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों का स्पर्श करती हैं। प्रत्येक वर्ग के अन्तिम वर्ण- ङ्, ञ्, ण्, न् और म् को अनुनासिक भी कहा जाता हैं, क्योकि इनका उच्चारण मुख के साथ नासिका से भी होता हैं।

2. अन्तःस्थ- य्, र्, ल् और व् वर्णो को अन्तःस्थ कहते हैं। इन्दे अर्धस्वर भी कहते हैं।

3. ऊष्म- श्, ष्, स्, ह्, वर्णो को ऊष्म कहते हैं।

अनुस्वार

इसका उच्चारण नासिका मात्र से होता हैं। यह सर्वथा स्वर के बाद ही आता हैं।

यथा- अहम् - अहं। सामान्यतया 'म्' व्यञ्जन वर्ण से पहले अनुस्वार (ं) मे परिवर्तित होता हैं।

1. विसर्ग (:)-- इसका उच्चारण किञ्चित् 'ह्' के सदृश किया जाता हैं। इसका भी प्रयोग स्वर के बाद ही होता हैं।

यथा- रामः, देवः, गुरुः

2. संयुक्त व्यञ्जन- दो व्यञ्जनां के संयोग से बने वर्ण को संयुक्त व्यञ्जन कहते हैं।

उदाहरण-

1. क्+ष्=क्ष्

2. त्+र्=त्र्
3. ज्+ञ्=ज्ञ्

उच्चारण स्थान

कण्ठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ एवं नासिका को उच्चारण स्थान कहते हैं। वर्णों का उच्चारण करने के लिए फेफड से निकली निःश्वास वायु इन स्थानो का स्पर्श करती है। कुछ वर्णो का उच्चारण एक साथ दो स्थानों से भी होता है। वर्णों के उच्चारण स्थानों को अग्निम तालिका से समझा जा सकता है–

स्थान	स्वर	व्यञ्जन			अयोगवाह	संज्ञा
		स्पर्श	अन्त:स्थ	ऊष्म		
कण्ठ	अ, आ	क्, ख, ग्, घ्, ङ्	य्	ह्	:	कण्ठ्य
तालु	इ, ई	च्, छ्, ज्, झ्, ञ्	र्	श्		तालव्य
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्	ल्	ष्		मूर्धन्य
दन्त	ऌ	त्, थ्, द्, ध्, न्		स्	*	दन्त्य
ओष्ठ	उ, ऊ	प्, फ्, ब्, भ्, म्			×प, ×फ	ओष्ठ्य
नासिका	अनुनासिक स्वर	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्			उपध्मानीय •, ँ	नासिक्य
कण्ठतालु	ए, ऐ		व्			कण्ठतालव्य
कण्ठोष्ठ	ओ, औ				#	कण्ठोष्ठ्य
दन्तोष्ठ						दन्तोष्ठ्य
जिह्वामूल					×क, ×ख	जिह्वामूलीय

समबद्ध स्थानों के साथ नासिका से भी पञ्चम वर्णों का उच्चारण होता है।

प्रयत्न

फेफड से निकली निःश्वास वायु को मुख. नासिका तथा कण्ठ आदि स्थानों से स्पर्श कराते हुए मनुष्य द्वारा अभीष्ट वर्णो के उच्चारणार्थ किए गए यत्न को प्रयत्न कहते है प्रयत्न के दो भेद होते है – आभ्यन्तर तथा बाह्य। वर्णो के उच्चारण काल मे मुख के अन्दर मनुष्य की चेष्टापरक क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते है। इसके पांच भेद है –

स्पृष्ट– वर्णो के उच्चारण काल मे जब जिह्वा के विभिन्न भागों द्वारा मुख के अन्दर के विभिन्न स्थानों को स्पर्श किया जाता है तो जिह्वा के इस प्रयत्न को स्पष्ट प्रयत्न कहते है। 'क्' से 'म्' तक सभी व्यञ्जन 'स्पृष्ट' प्रयत्न से उच्चारित होते है।

विसर्ग का भेद उपध्मानीय (जब विसर्ग के बाद प, फ वर्ण रहते हैं, तब अर्ध विसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण – पुनः पुनः, तपः फलम्)

विसर्ग का भेद जिह्वामूलीय (जब विस के बाद क, ख वर्ण रहते है, तब अर्धविसर्ग उच्चारण होता है, उदाहरण प्रातः कालः, दुःखम्)

ईषत् स्पृष्ट– वर्णो के उच्चारण काल मे जब जिह्वा द्वारा उच्चारण स्थानों को थोडा ही स्पर्श किया जाता है, तो जिह्वा के इस प्रयत्न को ईषत् स्पृष्ट कहते है य्, र्, ल् तथा व् ईषत् स्पृष्ट से उच्चारित होते है।

विवृत–– वर्ण विशेष के उच्चारण काल मे जब मुख–विवर खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को विवृत कहते है। सभी स्वर 'विवृत' प्रयत्न से उच्चारित होते है

ईषत् विवृत– वर्णो के उच्चारण काल मे जब मुख–विवर थोडा खुला रहता है, तो मुख के इस यत्न को ईषत् विवृत कहते हैं। श्, ष्, स्, ह् ईषत् विवृत प्रयत्न से उच्चारित होते है।

संवृत– वर्णो के उच्चारण काल मे फेफडे से निकलने वाले निःश्वास का मार्ग जब बन्द रहता है, तब इसे संवृत कहते है। इसका प्रयोग केवल ह्रस्व 'अ' के उच्चारण मेँ होता है।

बाह्य–प्रयत्न– वर्णो के उच्चारण का वह यत्न जो फेफड से कण्ठ तक होता है, उसे बाह्य प्रयत्न कहते है मुख से बाह्य होने की अपेक्षा से इसे बाह्य कहा जाता है। इसके ग्यारह भेद है

विवार, संवार, श्वास, नाद, घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित। बाह्य प्रयत्नो के आधार पर वर्णो का विभाजन निम्न तालिका से समझा जा सकता है–

विवार, श्वास, अघोष	*संवार, नाद, घोष*	*अल्पप्राण*	*महाप्राण*	*उदात्त, अनुदात्त तथा स्वरित*
'खर्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ग के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श्, ष्, स् "खर: विवारा: श्वासा: अघोषाश्च"	'हश्' प्रत्याहार के वर्ण = प्रत्येक वर्ग के तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर्ण, अन्त:स्थ एवं ह् "हश: संवारा नादा घोषाश्च"	वर्गों के प्रथम, तृतीय, पंचम वर्ण एवं अन्त:स्थ संज्ञक वर्ण	वर्गों के द्वितीय, चतुर्थ वर्ण एवं ऊष्म संज्ञक वर्ण	सभी स्वर वर्ण

" वर्णसमूहं शब्द: | पर्ण समूह को शब्द कहते हैं |

* प्राकृतिक स्वरूप के आधार पर शब्द के प्रकार — 3

[1] संज्ञा [2] सर्वनाम [3] विशेष्य/विशेषण

[1] संज्ञा शब्द - किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी और भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं |

[2] सर्वनाम शब्द

* संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं संस्कृत व्याकरण में सर्वनाम शब्द 3 प्रकार के होते हैं |

1. अस्मद् शब्द 2. युस्मद् शब्द 3. तत् शब्द

[1] अस्मद् शब्द

* जो शब्द स्वयं से सम्बन्धित हो वे अस्मद् शब्द कहलाते हैं |

Ex!- मैं, हम दोनों, हम सब, मेरा, मुझे ईत्यादि |

[2] युस्मद् शब्द

* जो शब्द तुम से सम्बन्धित हो वे युस्मद् शब्द कहलाते हैं |

Ex!- तुम, तुमदोनों, तुमसब, तुम्हारा, तेरा ईत्यादि |

[3] तत् शब्द

* जो शब्द वह से सम्बन्धित हो वे तत् शब्द कहलाते हैं।

Ex :- वह, वे दोनों, वे सब, उसका, उन्होंने इत्यादि।

NOTE :- भवत् [आप] शब्द का भी सर्वनाम शब्दों में ही प्रयोग होता है।

[3] विशेषण शब्द

* विशेषता सूचक शब्दों को विशेषण कहते हैं जिसकी विशेषता बताई जाती है वे शब्द विशेष्य होते हैं। अर्थात विशेष्य शब्द संज्ञा या सर्वनाम ही होते हैं।

विशेषण का स्वतंत्र रूप से कोई विभक्ति, वचन तथा लिंग नहीं होता है। जो विशेष्य का विभक्ति, वचन, लिंग होता है। वही विशेषण का होता है।

जाति के आधार पर शब्दों के प्रकार – 3

* भाषा में जाति को लिंग कहा जाता है।
* लिंग का निर्धारण क्रिया से होता है।
* संस्कृत भाषा में लिंग के आधार पर शब्द 3 प्रकार के होते हैं।

(i) पुल्लिंग शब्द (ii) स्त्रीलिंग शब्द (iii) नपुंसकलिंग शब्द

(i) पुल्लिंग शब्द – जिन शब्दों में पुरुषत्व के भाव प्रकट होते हैं वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं। पुल्लिंग शब्द अकारान्त / इकारान्त / आकारान्त उकारान्त होते हैं [अ, आ, इ, उ]

अकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "अ" हो।

Ex:- रामः, बालकः, पाठः, लेखः, कलमः, वेदः, ग्रन्थ, विद्यालयः, हिमालय, रजकः, भिक्षुकः, खगः, पर्यङ्कः, सूर्यः, वृक्षः, राक्षसः, दुर्जनः, दुष्टः, सिंहः, सर्पः, अश्वः इत्यादि।

आकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "आ" हो।

Ex:- राजा, महा, नेता, पिता, कर्ता, वक्ता, दाता इत्यादि

इकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "इ" हो।

Ex:- हरिः, मुनिः, ऋषिः, गिरिः, व्रीहिः (↓ चावल), इत्यादि

उकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "उ" हो।

Ex:- भानुः, मनुः, विष्णुः, साधुः, गुरुः, शिशुः, पशुः इत्यादि।

[2] स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों में "स्त्रीत्व" के भाव प्रकट होते हैं वे स्त्रीलिंग शब्द कहलाते हैं। स्त्रीलिंग शब्द आकारान्त / इकारान्त / ऊकारान्त होते हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "आ" हो।

Ex:- रमा, बालिका, लता, माला, शिखा, शाखा, गङ्गा, यमुना, कक्षा, धरा, वसुधा, धारा, जटा, प्रजा ईत्यादि।
↳ सदैव बहुवचन में प्रयुक्त

ईकारान्त पुल्लिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "ई" हो।

Ex:- नदी, लक्ष्मी, स्त्री, लेखनी, नारी, पृथ्वी ईत्यादि।

ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

* जिन शब्दों के अन्त में "ऊ" हो।

Ex:- वधू, चमू [सेना]

[3] नपुंसकलिंग शब्द

* जिन शब्दों में पुरुषत्व और स्त्रीत्व दोनों के भाव प्रकट होते हैं वे नपुंसकलिंग शब्द कहलाते हैं। संस्कृत व्याकरण में नपुंसकलिंग शब्दों को क्लीव [किन्नर] नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

* शरीर के अंगवाची शब्द सदैव नपुंसकलिंग होते हैं।
* तरल पदार्थ के सभी शब्द नपुंसकलिंग होते हैं।
* निर्जीव वस्तुएँ जिनका व्यक्तिगत निर्धारण न होकर जातिगत और भावगत बोध होता है वे नपुंसकलिंग शब्द होते हैं।

नपुंसकलिंग शब्द अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त होते है इनमें विसर्ग का प्रयोग नही होता है तथा अकारान्त शब्दो में "अ" के स्थान पर "अम्" हो जाता है

Ex:- फलम्, ज्ञानम्, धनम्, वस्त्रम्, पुस्तकम्, पत्रम्, पात्रम्, पुष्पम्, भोजनं, हस्तम्, पादम्, अक्षि, वारि [जल], मधु [शहद] रक्तम्, दुग्धम्, जलम्, पयम्

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
अ:	आ	अम्
आ	ई	इ
इ:	ऊ	उ
उ:		

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Toppersnotes
Unleash the topper in you

संधि

* एक स्वर वर्ण के अधिकतम **प्रयत्न चार** (उदात्त, अनुदात्त, स्वरित, विवार) होते हैं

* सन्धि *

* सन्धि शब्द में सम उपसर्ग है। सन्धि शब्द का शाब्दिक अर्थ योग/मेल/जोड़/संधान होते हैं।

परिभाषा → वर्ण सन्धाना सन्धिः।
"वर्ण मेल को सन्धि कहते हैं।"

सूत्र :- परः सन्निकर्षः संहिता "अर्थात" दो अत्यन्त निकटवर्ती वर्णों के मेल में परस्पर सन्धि होती है।

* सन्धि के तीन भेद होते हैं।

(1) स्वर सन्धि (अच् सन्धि) **(2) व्यंजन सन्धि (हल् सन्धि)** **(3) विसर्ग सन्धि।**

(1) **स्वर सन्धि →** दो स्वर वर्णों के मेल से उत्पन्न होने वाले विकार (परिवर्तन) को स्वर सन्धि कहते हैं।
अर्थात स्वर वर्ण + स्वर वर्ण = स्वर सन्धि

स्वर सन्धि के मुख्य रूप से **पाँच** प्रकार होते हैं।

(i) यण् सन्धि (ii) अयादि सन्धि (iii) गुण सन्धि (iv) वृद्धि सन्धि (v) दीर्घ सन्धि,

NOTE :- पररूप, पूर्वरूप और प्रकृतिभाव इन तीनों को स्वर सन्धि का प्रकार नहीं माना जाता है।
क्योंकि इन तीनों में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। परन्तु ये तीनों स्वर सन्धि में निहित होती है।

(i) **यण् सन्धि →** इकोयणचि

इकः यण् अचि

इक् + अच्
↓ ↓
यण् असमान

इक् [इ उ ऋ लृ] + असमान अच्
↓ ↓ ↓ ↓
यण् [य् व् र् ल्]

(i) स्त्री + उत्सव

स्त्री + उ

र् ई + उ

↓

य्

स्त्र्युत्सव

(ii) श्री + अंश

श् र् ई + अं

↓

य्

श्र्यंश

श्रींश

(iii) पारि + अत्र

र् इ + अ

↓

य्

पार्यत्र / पार्यत्र

(iv) परि + आवरणम्

पर्यावरणम्

(vi) नदी + उद्गम

नद्युद्गम / नद्युद्गम

* यदि + अपि

द् इ + अ

↓

यद्य् पि

यद्यपि

* प्रति + आहारम्

प्रत्याहारम्

* अनु + अय

अन्वय

* मधु + अरि ⇒ मध्वरि

* वधू + आगमनम् ⇒ वध्वागमनम्

* तनु + अङ्गी ⇒ तन्वङ्गी

* मनु + अन्तरम् ⇒ मन्वन्तरम्

* अनु + अत्र ⇒ अन्वत्र

* सु + आगतम् ⇒ स्वागतम्

* भानु + आगम ⇒ भान्वागम

ऋ → र

* मातृ + आज्ञा

त + ऋ + आ

ऋ → र

मातराज्ञा

मात्राज्ञा

* धातृ + अंश

त + ऋ + अंश

ऋ → र

धातरंश

धात्रंश

* पितृ + आदेश

त + ऋ + आ

ऋ → र

पितरादेश

पित्रादेश

* मातृ + अंश → मात्रंश

* मातृ + आज्ञा → मात्राज्ञा

* होतृ + अंश → होत्रंश

ऌ → ल

* ऌ + आकृति ⇒ लाकृति

* ऌ + आकार ⇒ लाकार

* ऌ + आदेश ⇒ लादेश

* अध्यक्ष

अ ध् य + अ + क + ष + अ

इ/ई

अधि + अक्ष

* अध्यादेश

अध् य + आदेश

अधि + आदेश

* प्रत्युपकार

प्रत् + य + उपकार

प्रति + उपकार

* साध्वागमनम्

साधु + आगमनम्

* नार्यास्ति

नारयास्ति

नारी + आस्ति

*

* गुर्वाज्ञा

गुरु + आज्ञा

* स्वागत

सु + आगत

* धन्वादेश

धन्व + आदेश

* प्रत्युत्तरम

* अन्वेकम्

अन्व + ऐकम

अन्वैकम्

* स्त्र्याज्ञा

स्त्री + आज्ञा

* पर्याप्त
  परि + आप्त

* व्याप्त
  वि + आप्त

* न्याय
  नि + आय

* न्यून
  नि + ऊन

* अभ्युदय
  अभि + उदय

* अप्याहितम्
  अपि + आहितम्

* उपर्युपरि
  उपरि + उपरि

* अध्यधि
  अधि + अधि

* पित्रेकता
  पितृ + एकता

* धात्रात :
  धातृ + आत

(ii) **अयादि सन्धि** → एचोऽयवायाव :

एच् [ए → अय्, ओ → अव्, ऐ → आय्, औ → आव्] + स्वर

* शे + अनम्
  श + ए + अनम्
  ए → अय्
  शयनम्

* रूपे + ए
  रूप् + ए + ए
  ए → अय्
  रूपये

* कवि + ए
  कवये = कव् + ए
  क् + अ व् + ये
  कवे + ए

* चे + अनम् ⇒ चयनम्
* ने + अनम् ⇒ नयनम्
* जे + अ : ⇒ जय :
* भे + अ = भय
* हो + अनम् = हवनम्

* भो + अनम् = भवनम्
* लौ + अनम् = लावणम्
* श्रौ + अनम् = श्रावणम्
* पो + अनम् = पवनम्
* वटो + वृक्ष =
  ट् + ओ + वृ
  ओ → अव्
  → वटवृक्ष

* गै + अकः = गायकः
* दै + अकः = दायकः
* नै + अकः = नायकः
* विधै + अकः = विधायकः

विनै + अक = विनायकः
धौ + अक = धावकः
पौ + अक = पावकः
श्रौ + अक = श्रावकः

अपवाद → वान्तो यि प्रत्यये

पदान्त में **ओ/औ** और उत्तर पद में प्रत्यय का **य** हो तो भी अयादि सन्धि होती है।

जैसे-: गो + यम् = गव्यम् हो + यम् = हव्यम्
भो + यम् = भव्यम् श्रो + यम् = श्रव्यम्
नौ + यम् = नाव्यम् सौ + यम् = साव्यम्

(ii) अध्वपरिमाणे च → मार्ग अथवा दूरी के परिणामवाचक शब्द में भी अयादि सन्धि होती है।

जैसे:- गव्यूतिः ⇒ गो + यूतिः

NOTE:- उपर्युक्त उदाहरणों में अयादि सन्धि है। तथा यह सभी उदाहरण एचोऽयवायावः सूत्र के अपवादिक रूप है।

(iii) **गुण सन्धि** → (1) अदेङ्गुणः ← गुणसंज्ञा विधायक सूत्र

अत् + एङ् + गुणः
↓ ↓
(अ) (ए ओ)

* अर्थात **अ ए ओ** को गुण कहते हैं।

(2) गुण सन्धि सूत्र → आद्गुणः

अ/आ + इ/ई = ए
अ/आ + उ/ऊ = ओ
अ/आ + ऋ/ॠ = अर्
अ/आ + ऌ = अल्